ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि। ऋ. 2/23/2
हे प्रभो ! सम्पूर्ण विद्याओं के आदि मूल आप ही हैं।
O Lord ! you are the fountain head of all knowledge.

वर्ष 38, अंक 23 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 अप्रैल, 2015 से रविवार 26 अप्रैल, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

आर्य समाज के संगठन की एकता के प्रयास में कोई कसर नहीं रखेंगे– आचार्य बलदेव

आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव की स्वीकृति
महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में समिति का गठन

अन्त. आर्य महासम्मेलनों की शृंखला में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन ऑस्ट्रेलिया-सिडनी 27-28-29 नवम्बर, 2015 घोषित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक 28 मार्च, 2015 को हनुमान रोड, कनॉट प्लेस स्थित कार्यालय में सम्पन्न हुई जिसमें सभा के सभी अंतरंग पदाधिकारी एवं सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभा की इस अंतरंग बैठक में आर्य समाज के कार्यों की वृद्धि एवं प्रचार-प्रसार, संगठन, एकता, शोध, प्रशिक्षण, वैदिक साहित्य वितरण, तथा देश विदेशों में आर्य पर्वों एवं समारोहों के क्रियान्वयन पर महत्त्वपूर्ण निर्णय सभा द्वारा लिए गए।

- **यज्ञ में एकरूपता के लिए होगा ''यज्ञ पद्धति का प्रकाशन''।**
- **वैदिक साहित्य को अंग्रेजी पुस्तक प्रेमियों तक पहुंचाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों में भी होगी भागीदारी।**
- **अगले मास नेपाल पुस्तक मेले में होगा साहित्य प्रचार।**
- **प्रत्येक प्रान्त में होगा वर्ष में एक बार आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन।**
- **प्रत्येक तीन वर्षों में होगा हर प्रान्तीय सभा के अन्तर्गत एक प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन।**
- **प्रान्तीय सभाएं पुस्तक मलों को अपने वार्षिक एजेण्डे में शामिल करें।**

बैठक की अध्यक्षता करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी एवं विभिन्न प्रान्तों से पधारे अन्तरंग सभा एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यगण।

बैठक में पधारने पर महाशय धर्मपाल जी को आशीर्वाद देते आचार्य बलदेव जी।

सभा की कार्यवाही का प्रारंभ गायत्री मंत्र एवं ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना मंत्रों के माध्यम से हुआ।

सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने की। सभा की अन्तरंग बैठक की कार्यवाही का संचालन सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी ने किया। सभा द्वारा लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णयों का विवरण निम्न प्रकार है।

1. सर्वप्रथम आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने के लिए समन्वय एवं समर्पण की भावना को बलवती बनाने की आवश्यकता पर चर्चा की गई जिससे आर्य समाज का चहुँ मुखी विकास हो।

आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में वृद्धि हेतु - अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण प्रस्ताव की स्वीकृति हुई जिससे आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की गति अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़े। अन्य देशों में यज्ञों एवं आर्य महासम्मेलन के आयोजनों में वृद्धि होती रहे। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान दानवीर शिरोमणि महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जिसके सान्निध्य में स्वीकृति शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्रों की

- शेष पृष्ठ 5 पर

स्वामी अग्निवेश का यासीन मलिक के साथ दिया धरना एवं वक्तव्य शर्मसार करने वाला
अग्निवेश आर्यसमाज के प्रवक्ता नहीं - सारे देश एवं विदेश की आर्यसमाजों में निन्दा प्रस्ताव

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग : देश द्रोह के विरुद्ध कड़े कदम उठाए सरकार - आर्यसमाज

हाल ही में जम्मू कश्मीर के श्रीनगर में घटित घटना से कौन भारतीय परिचित नहीं होगा। आज यह तथ्य प्रत्येक भारतवासी के लिए विचारणीय है। एक व्यक्ति का इतना दु:साहस की वह भारत भूमि पर पल बढ़ कर शत्रु मुल्क का गुणगान कर रहा है। जेल में अपने अपराधों की सजा पा रहे एक अलगाववादी नेता मसर्रत आलम भट्ट जेल से रिहा होकर जन समुदाय में पाकिस्तानी झण्डे फहराने एवं राष्ट्र विरोधी नारेबाजी करना एक देशद्रोह अपराध है। स्वामी अग्निवेश ने यासीन मलिक के साथ मिलकर जो वक्तव्य दिया वह हम सबको शर्म सार करने वाला है। किसी भी व्यक्ति अथवा भारतवासी के लिए यह क्षम्य नहीं है। ज्ञात हो कि - अग्निवेश का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है और न ही वह आर्यसमाज का प्रवक्ता ही है। इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा ने पहले भी प्रैस विज्ञप्तियां जारी की थी और अब पुन: जारी की जा रही हैं। जम्मू कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ-साथ हरियाणा, मध्य भारत, गुजरात आदि सभाओं के साथ साथ सारे देश तथा विदेशों की आर्यसमाजों ने स्वामी अग्निवेश के विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव पारित किए हैं। सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भारत सरकार से अपील करती है कि

- शेष पृष्ठ 8 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर द्वारा प्रेषित निन्दा प्रस्ताव

गत् कुछ दिनों से श्रीनगर मे जो कुछ भी हो रहा है वह अति निन्दनीय है। असामाजिक तत्त्व चाहे वह सईद अलि शाह गिलानी, मसर्रत आलम भट्ट, यासीन मलिक या अग्निवेश हो, भारत में रहकर,भारत का खाकर, भारत के ही खिलाफ जहर उगलें,पाकिस्तानी झंडा फहरायें तथा पाकिस्तान के हक में नारे लगायें, यह अति निन्दनीय है। अग्निवेश, जो अपने आप को सामाजिक कार्यकर्त्ता बताते हैं, इससे पहले भी सईद गिलानी आदि अलगावादी नेताओं से मिलते रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर इसका घोर विरोध करती है तथा जम्मू कश्मीर व केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करती है कि इन राष्ट्र विरोधी तत्त्वों पर राष्ट्र द्रोह का केस लगा कर कड़ी कार्यवाई की जाये।

- भारत भूषण आर्य, प्रधान

वेद-स्वाध्याय

हे परमेश्वर! मुझे सर्वदा अभय बना दें

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून विचर्षणि।।

ऋ॰ 2/41/12: अथर्व॰ 20/57/10

ऋषिः - **गृत्समदः**।। देवता- **इन्द्रः**।। छन्दः- **निचृद्गायत्री**।।

शब्दार्थ- **इंद्र**-इंद्र परमेश्वर! मुझे **सर्वाभयः आशाभ्यः परि**- सब दिशाओं से **अभयं करत्**- अभय कर दे। **शत्रून जेता**- जो परमेश्वर शत्रुओं को जीवनेवाला है, **विचर्षणिः**- और सब कुछ (प्रत्येक प्राणी के प्रत्येक कर्म को) पूरी तरह देखनेवाला है।

विनयः- मैं डरता क्यों हू? परमेश्वर (इन्द्र) की इस सृष्टि में रहते हुए तो किसी भी काल में, किसी भी देश में भय का कुछ भी कारण नहीं है। क्या मैं अपने शत्रुओं से डरता हूं? मेरा तो इस इंद्र की सृष्टि में कोई शत्रु नहीं होना चाहिए। मेरा कोई शत्रु है ही नहीं। हां, एक अर्थ में पाप करने वाले मनुष्यों को शत्रु कहा जा सकता है, क्योंकि पाप करना परमात्मा से शत्रुता करना है-पाप करना ईश्वरीय शासन के प्रति विद्रोह करना है, परंतु ऐसे पाप करने वाले भाई से भी मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? यह ठीक है कि ऐसे पाप करने वाले भाई तब मुझे अपना शत्रु समझ लेंगे जब कभी उनके पाप का विरोध करना मेरा कर्त्तव्य हो जाएगा और तब वे मुझे अपना शत्रु मानकर नाना प्रकार से सताने-कष्ट देने- को भी उद्यत होंगे, परंतु उस पापी भाई के सताने से भी मेरा क्या बिगड़ेगा? वह तो बेचारा स्वयं परमात्मदेव का मारा हुआ है। परमात्मा तो स्वभावतः शत्रून जेता है। उससे शत्रुता करके, अर्थात् पाप करके कौन बचा रह सकता है? यदि यह विश्वास पक्का हो जाए कि परमात्मा शत्रून जेता है तो अज्ञानी, पापी पुरूषों की ओर से आये हुए बड़े से बड़े संतापों का, घोर-से-घोर अत्याचारों का भी भय हट जाए। ऐसा विचार थोड़ी देर के लिए आने पर ही एकदम निर्भयता आ जाती है और फिर उसे सचमुच विचर्षणि समझ लेने पर तो कोई भय रहता ही नहीं। देखा, वह विचर्षणि परमेश्वर सब प्राणियों के सब कर्मो को ठीक-ठीक देखता हुआ पाप और पुण्य का फल दे रहा है। वह ठीक ढंग से ठीक समय प्रत्येक पाप का विनाश कर रहा है-पाप को परास्त कर रहा है। तब मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? मुझे तो कोई दुख कलेश तभी मिलेगा जब मेरा ही कोई पापकर्म उदय होगा, नहीं तो किसी अन्य मनुष्य की चाहना से मुझे क्लेश कभी नहीं हो सकता और यदि मेरे अपने ही पाप-कर्मो के कारण कोई क्लेश आता है तो वह तो आना ही चाहिए। उसे मैं प्रसन्नता से सह-सहकर निष्पाप और अनृण होता जाउंगा। वह क्लेश उस शत्रु का भेजा हुआ नहीं है, किन्तु मेरे प्यारे परमेश्वर का भेजा है, उसका तो मुझे स्वागत करना चाहिए। एवं इस संसार में चारों दिशाओं में, मेरा अब कोई दुख दे सकनेवाला शत्रु नहीं रहा है। जब से प्रभु को विचर्षणि और शत्रून जेता जान लिया है, तब से मैं अभय हो गया हूं-सब ओर से अभय हो गया हूं-किसी दिशा से कोई भय नहीं। अभय, अभय!

- आचार्य अभयदेव

वैदिक विनय से साभार

ग्रन्थ परिचय

पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी)

प्रश्न1 : महात्मा आनन्द स्वामी जी की कथाओं को आधार बनाकर उन्हें अनेक पुस्तकों का रूप दिया गया है। क्या महर्षि के प्रवचनों की भी कोई पुस्तक है ?

उत्तरः हाँ, महर्षि दयानन्द ने पूना में 15 व्याख्यान दिये थे, जिन्हें पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक का नाम 'उपदेश मंजरी' है।

प्रश्न 2: ये व्याख्यान अथवा उपदेश महर्षि ने कब दिये थे ?

उत्तरः बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना करने के पश्चात् महर्षि पूना गये, जहाँ उन्होंने 20 जून से 5 सितम्बर 1875 तक (अर्थात् लगभग दो मास तक) निवास किया था। इसी दौरान उन्होंने ये 15 व्याख्यान दिये थे।

प्रश्न 3: इन दो माह के दौरान महर्षि ने क्या केवल 15 व्याख्यान ही दिये?

उत्तरः ऐसा नहीं है। विभिन्न शोधों के आधार पर ज्ञात होता है कि महर्षि ने इस दौरान कुल 54 व्याख्यान दिये थे, परंतु संकलन केवल 15 व्याख्यानों का ही हो पाया था।

प्रश्न 4: महर्षि तो प्रायः संस्कृत में व्याख्यान देते थे। क्या यह पुस्तक भी संस्कृत में है?

उत्तरः नहीं, प्रारंभ में कुछ वर्षो तक महर्षि संस्कृत में बोलते रहे थे, परंतु बाद में उन्होंने हिन्दी भाषा में बोलने का अभ्यास कर लिया था। इन दिनों भी उनका हिन्दी में बोलने का अभ्यास हो चुका था। अतः ये व्याख्यान हिन्दी में होने से पुस्तक भी हिन्दी भाषा में है।

प्रश्न 5: क्या इस पुस्तक में महर्षि के उपदेशों का शब्दशः प्रकाशन किया गया है ?

उत्तरः नहीं, जब महर्षि ने व्याख्यान दिये, तब उनकी रिपोर्ट प्रतिदिन वहाँ के मराठी समाचार-पत्रों में छपती थी। बाद में, मराठी भाषा से ही इनका हिन्दी में रूपान्तरण करके पुस्तक रूप में छापा गया था।

प्रश्न 6 : इनका मराठी भाषा में अनुवाद किसने किया था ?

उत्तर : एक सूचना के अनुसार, उनका मराठी भाषा में अनुवाद पूना हाई स्कूल के सहायक मुख्याध्यापक श्री गणेश जर्नादन आगाशे ने किया था। तत्पश्चात् इनका संग्रह और सम्पादन श्री गोविन्द रानाडे जैसे विद्वान् ने किया।

प्रश्न 7 : इसके पश्चात् इनका हिन्दी में अनुवाद किसने किया था ?

उत्तरः एक महाराष्ट्र ब्राह्मण श्री पंडित गणेश रामचन्द्र ने इनका हिन्दी में अनुवाद किया था।

प्रश्न 8: इनका सर्वप्रथम प्रकाशन किसने और कब करवाया था?

उत्तरः सर्वप्रथम्, इनका पुस्तक रूप में प्रकाशन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान सन् 1983 में करवाया था।

वैसे इससे पहले महर्षि के जीवनकाल में ही दिसंबर, सन् 1881 से पूर्व, गुजराती भाषा में 'स्वामी दयानन्द सरस्वती नु भाषण' नाम से उपरोक्त मराठी संस्करण का प्रकाशन हो गया था।

प्रश्न 9: महर्षि ने पूना में ये 15 व्याख्यान किस विषय पर दिये थे।

उत्तरः महर्षि ने ये व्याख्यान भिन्न-भिन्न विषयों पर दिये थे। इनकी सूची निम्न है:-

1. ईश्वर सिद्धि- दिनांक 4 जुलाई, 1875 ई. रविवार (आषाढ़; सुदी 1, संवत् 1932)
2. ईश्वर सिद्धि पर वाद-विवाद- 6 जुलाई, सन 1875 ई. मंगलवार (आषाढ़ सुदी 4, संवत् 1932)।
3. धर्माधर्म - 8 जुलाई, सन 1875 ई.,बृहस्पतिवार (आषाढ़ सुदी 6, विक्रमी 1932)।
4. धर्माधर्म विषय पर शंका-समाधान- 10 जुलाई सन् 1875 ई., शनिवार (आषाढ़ सुदी 8, विक्रमी संवत् 1932)
5. वेद- 13 जुलाई, सन् 1875 ई., मंगलवार (आषाढ़ सुदी 10 विक्रमी 1932)।
6. पुनर्जन्म- 17, जुलाई सन् 1875 ई., शनिवार (आषाढ़ सुदी 14, विक्रमी 1932)।
7. यज्ञ और संस्कार - 20, जुलाई, सन् 1875 ई. मंगलवार (श्रावण बदी 2, विक्रमी संवत् 1932)।
8-13. इतिहास- क्रमशः 24,25,27,29,व 31 जुलाई एवं 2 अगस्त, 1875 ई.।
14. नित्य कर्म और मुक्ति - 3 अगस्त, सन् 1875 ई।
15. स्वयं कथित जीवनचरित - 4 अगस्त, 1875 ई।

प्रश्न 10: इन 15 व्याख्यानों में 6 व्याख्यान तो इतिहास पर हैं। इनमें कौन से इतिहास का वर्णन है?

उत्तरः यहाँ इतिहास शब्द से सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ लिया गया है। महर्षि के अनुसार, 'इतिहास नाम वृत्तम्' इतिवृत्त अर्थात् अतीत के वर्णन को इतिहास कहा जाता है। इतिहास जगदुत्पत्ति से प्रारंभ होकर आज के समय तक चला आता है। इस अर्थ के आधार पर महर्षि ने 'जगत् कैसे उत्पन्न हुआ और किसने उत्पन्न किया ?' जैसे दार्शनिक एवं महत्वपूर्ण प्रश्नों का विवेचन सांख्य दर्शन, वेद मंत्रों एवं उपनिषदों के आधार पर स्पष्ट एवं बहुत सुन्दर प्रकार से किया है।

प्रश्न 11: वैसे तो जिन विषयों पर महर्षि के व्याख्यान हैं, उन विषयों का विवेचन उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में भी किया है। फिर व्याख्यानों में क्या विशेषता है ?

उत्तरः हाँ, यह सत्य है कि महर्षि ने अपने ग्रन्थों में भी इन विषयों का विवेचन किया है। परंतु कुछ विषयों का वर्णन इन व्याख्यानों में युक्तियों और प्रमाणों के आधार पर अधिक स्पष्ट रूप में किया गया है, जबकि एक स्थान पर ईश्वर द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान के विषय में विरोधी विचार भी मिलता है। छठे व्याख्यान में महर्षि ने वेद ज्ञान को सृष्टि की उत्पत्ति के पांच वर्ष पश्चात् दिया गया माना है। जबकि महर्षि के स्वयं के ग्रन्थों के आधार पर यह सिद्धांत उन्हीं के विरुद्ध है। सम्भवतः यह रिपोर्ट लेने वालों की भूल हो सकती है। ऐसे विरोधी स्थानों में महर्षि के ग्रन्थों को ही प्रामाणिक मानना चाहिए।

(महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय से उद्धृत)

अगले अंक में एक और ग्रंथ के परिचय की प्रस्तुति होगी। - सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

भारतीय इतिहास के साथ एक सुनियोजित खिलवाड़

- डॉ. विवेक आर्य

भारतीय इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में औरंगजेब और शिवाजी के संघर्ष के पश्चात चुनिन्दा घटनाओं को ही प्राथमिकता से बताया जाता हैं जैसे कि नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली द्वारा भारत पर आक्रमण करना, प्लासी की लड़ाई में सिराज-उद्-दौलाह की हार और अंग्रेजों का बंगाल पर राज होना और मराठों की पानीपत के युद्ध में हार होना। उसके पश्चात् टीपू सुल्तान की हार ,सिखों का उदय और अस्त से १८५७ के संघर्ष तक का वर्णन मिलता हैं। एक प्रश्न उठता हैं कि इतिहास के इस लंबे १०० वर्ष के समय में भारत के असली शासक कौन थे? शक्तिहीन मुग़ल तो दिल्ली के नाममात्र के शासक थे परन्तु उस काल का अगर कोई असली शासक था तो वह थे मराठे। शिवाजी महाराज द्वारा देश,धर्म और जाति की रक्षा के लिए जो अग्नि महाराष्ट्र से प्रज्जल्वित हुई थीं उसकी सीमाएँ महाराष्ट्र के बाहर फैल कर देश की सीमाओं तक पहुँच गई थी। इतिहास के सबसे रोचक इस स्वर्णिम सत्य को देखिये कि जिस मतान्ध औरंगजेब ने वीर शिवाजी महाराज को पहाड़ी चूहा कहता था उन्ही शिवाजी के वंशजों को उसी औरंगजेब के वंशजों ने महाराजाधिराज और वज़रे मुतालिक के पद से सुशोभित किया था। जिस सिंध नदी के तट पर आखिरी हिन्दू राजा पृथ्वी राज चौहान के घोड़े पहुँचे थे उसी सिंध नदी पर कई शताब्दियों के बाद अगर भगवा ध्वज लेकर कोई पहुँचा तो वह मराठा घोड़ा था। सिंध के किनारों से लेकर मदुरै तक, कोंकण से लेकर बंगाल तक मराठा सरदार सभी प्रान्तों से चौथ के रूप में कर वसूल करते थे, स्थान स्थान पर अपने विरुद्ध उठ रहे विद्रोहों को दबाते थे, जंजीरा के सिद्दियों को हिन्दू मंदिरो को भ्रष्ट करने का दंड देते थे, पुर्तगालियों द्वारा हिन्दुओं को जबरदस्ती ईसाई बनाने पर उन्हें यथायोग्य दंड देते थे, अंग्रेज सरकार जो अपने आपको अजेय और विश्व विजेता समझती थी, मराठों को समुद्री व्यापार करने के लिए टैक्स लेते थे, देश में स्थान स्थान पर हिन्दू तीर्थो और मन्दिरों का पुनरुद्धार करते थे जिन्हें मुसलमानों ने नष्ट कर दिया था, जबरन मुसलमान बनाये गए हिन्दुओं को फिर से शुद्ध कर हिन्दू बनाते थे । मराठों के राज में सम्पूर्ण आर्यावर्त्त राष्ट्र में फिर से भगवा झण्डा लहराता था और वेद, गौ और ब्राह्मण की रक्षा होती थी।

अंग्रेज लेखक और उनके मानसिक गुलाम साम्यवादीलेखकों द्वारा एक शताब्दी से भी अधिक के हिन्दुओ के इस स्वर्णिम राज को पाठ्य पुस्तकों में न लिखा जाना इतिहास के साथ खिलवाड़ नहीं तो और क्या हैं। हम न भूले कि जो ''राष्ट्र अपने प्राचीन गौरव को भुला देता हैं'' , वह अपनी राष्ट्रीयता के आधार स्तम्भ को खो देता हैं।

उलटी गंगा बहा दी : वीर शिवाजी का जन्म १६२७ में हुआ था। उनके काल में देश के हर भाग में मुसलमानों का ही राज्य था। यदा कदा कोई हिन्दू राजा संघर्ष करता तो उसकी हार, उसी की कौम के किसी विश्वासघाती के कारण हो जाती, हिन्दू मंदिरों को भ्रष्ट कर दिया जाता, उनमें गाय की कुरबानी देकर हिन्दुओं को नीचा दिखाया जाता था। हिन्दुओं की लड़कियों को उठा कर अपने हरम की शोभा बढ़ाना अपने आपको धार्मिक सिद्ध करने के समान था। ऐसे अत्याचारी परिवेश में वीर शिवाजी का संघर्ष हिन्दुओं के लिए एक वरदान से कम नहीं था। हिन्दू जनता के कान सदियों से यह सुनने के लिए थक गए थे कि किसी हिन्दू ने मुसलमान पर विजय प्राप्त की। १६४२ से शिवाजी ने बीजापुर सल्तनत के किलो पर अधिकार करना आरंभ कर दिया। कुछ ही वर्षों में उन्होंने मुग़ल किलो को अपनी तलवार का निशाना बनाया। औरंगजेब ने शिवाजी को परास्त करने के लिए अपने बड़े बड़े सरदार भेजे पर सभी नाकामयाब रहे। आखिर में धोखे से शिवाजी को आगरा बुलाकर कैद कर लिया जहाँ पर अपनी चतुराई से शिवाजी बच निकले। औरंगजेब पछताने के सिवाय कुछ न कर सका। शिवाजी ने मराठा हिन्दू राज्य की स्थापना की और अपने आपको छत्रपति से सुशोभित किया। शिवाजी की अकाल मृत्यु से उनका राज्य महाराष्ट्र तक ही फैल सका था। उनके पुत्र शम्भा जी में चाहे कितनी भी कमिंया हों पर अपने बलिदान से शम्भा जी ने अपने सभी पाप धो डाले। औरंगजेब ने शम्भा जी के आगे दो ही विकल्प रखे थे या तो मृत्यु का वरण कर ले अथवा इस्लाम को ग्रहण कर ले। वीर शिवाजी के पुत्र ने भयंकर अत्याचार सह कर मृत्यु का वरण कर लिया पर इस्लाम को ग्रहण कर अपनी आत्मा से दगाबाजी नहीं की और हिन्दू स्वतंत्रता रुपी वृक्ष को अपने रुधिर से सींच कर और हरा भरा कर दिया। शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् औरंगजेब ने सोचा की मराठों के राज्य को नष्ट कर दे परन्तु मराठों ने वह आदर्श प्रस्तुत किया जिसे हिन्दू जाति को सख्त आवश्यकता थी। उन्होंने किले आदि त्याग कर पहाड़ों और जंगलों की राह ली। संसार में पहली बार मराठों ने छापामार युद्ध को आरंभ किया। जंगलों में से मराठे वीर गति से आते और भयंकर मार काट कर, मुगलों के शिविर को लूट कर वापिस जंगलों में भाग जाते। शराब-शबाब की शौकीन आरामपस्त मुग़ल सेना इस प्रकार के युद्ध के लिए कही से भी तैयार नहीं थी। दक्कन में मराठों से २० वर्षों के युद्ध में औरंगजेब बूढ़ा होकर निराश हो विश्वासपात्र गया, करीब ३ लाख की उसकी सेना काल की ग्रास बन गई। उसके सभी विश्वास पात्र सरदार या तो मर गए अथवा बूढ़े हो गए। पर वह मराठों के छापा मार युद्ध से पार न पा सका। पाठक मराठों की विजय का इसी से अंदाजा लगा सकते हैं कि औरंगजेब ने जितनी संगठित फौज शिवाजी के छोटे से असंगठित राज्य को जीतने में लगा दी थी उतनी फौज में तो उससे १० गुना बड़े संगठित राज्य को जीता जा सकता था। अंत में औरंगजेब की भी १७०५ में मृत्यु हो गई परन्तु तब तक पंजाब में सिख, राजस्थान में राजपूत, बुंदेलखंड में छत्रसाल, मथुरा,भरतपुर में जाटों आदि ने मुगलिया सल्तनत की ईट से ईट बजा दी थी। मराठों द्वारा औरंगजेब को दक्कन में उलझाने से मुगलिया सल्तनत इतनी कमजोर हो गई कि बाद में उसके उतराधिकारियों की आपसी लड़ाई के कारण ताश के पत्तों के समान वह ढह गई। इस उलटी गंगा बहाने का सारा श्रेय वीर शिवाजी को जाता हैं।

स्वार्थ से बड़ा जाति अभिमान : इतिहास इस बात का गवाह हैं कि मुग़लों का भारत में राज हिन्दुओं की एकता में कमी होने के कारण ही स्थापित हो सका था। अकबर के काल से ही हिन्दू राजपूत एक ओर अपने ही देशवासियों से, अपनी ही कौम से अकबर के लिए लड़ रहे थे वही दूसरी और अपनी बेटियों की डोलियों को मुगल हरमों में भेज रहे थे। औरंगजेब ने जीवन की सबसे बडी गलती यही की कि उसने करफिर समझ कर राजपूतों का अपमान करना आरंभ कर दिया जिससे न केवल उसकी शक्ति कम हो गई अपितु उसकी सल्तनत में चारों ओर से विरोध आरंभ हो गया। भातृत्व की भावना को पनपने का मौका मिला और भाई ने भाई को अपने स्वार्थ और परस्पर मतभेद को त्याग कर गले से लगाया। शिवाजी के पुत्र राजाराम के नेतृत्व में मराठों ने जिनजी के किले से संघर्ष आरंभ कर दिया था। मराठों के सेनापति खान्डोबलाल ने उन मराठा सरदारों को जो कभी जिनजी के किले को घेरने में मुग़लों का साथ दें रहे थे अपनी और मिलाना आरंभ कर दिया। नागोजी राणे को पत्र लिख कर समझाया गया कि वे मुगलों का साथ न देकर अपनों का साथ दे जिससे देश,धर्म और जाति का कल्याण हो सके। नागोजी ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया और अपने ५,००० आदमियों को साथ लेकर वे मराठा खेमे में आ मिले। अगला लक्ष्य शिरका था जो अभी भी मुगलों की चाकरी कर रहा था। शिरका ने अपने अतीत को याद करते हुए राजाराम के उस फैसले को याद दिलाया जब राजाराम ने यह आदेश जारी किया था की जहाँ भी कोई शिरका मिले उसे मार डालो। शिरका ने यह भी कहा की राजाराम क्या वह तो उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हैं जब पूरा भोंसले खानदान मृत्यु को प्राप्त होगा तभी उसे शांति मिलेगी। खान्डोबलाल शिरका के उत्तर को पाकर तनिक भी हतोत्साहित नहीं हुआ। उन्होंने शिरका को पत्र लिखकर कहा की यह समय परस्पर मतभेदों को प्रदर्शित करने का नहीं हैं। मेरे भी परिवार के तीन सदस्यों को राजाराम ने हाथी के तले कुचलवा दिया था। मैं राजाराम के लिए नहीं अपितु हिन्दू स्वराज्य के लिए संघर्ष कर रहा हूँ। इस पत्र से शिरका का हृदय द्रवित हो गया और उसके भीतर हिन्दू स्वाभिमान जाग उठा। उसने मराठों का हरसंभव साथ दिया और मुग़लों के घेरे से राजाराम को छुड़वा कर सुरक्षित महाराष्ट्र पहुँचा दिया।

काश! अगर जयचंद से यही शिक्षा मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय ले ली होती तो भारत से पृथ्वी राज चौहान के हिन्दू राज्य का कभी अस्त न होता।

महाराष्ट्र से भारत के कोने कोने तक मराठों ने मराठा संघ की स्थापना कर महाराष्ट्र के सभी सरदारों को एक तार में बांध कर, अपने सभी मतभेदों को भुला कर, संगठित हो अपनी शक्ति का पुन: निर्माण किया जो शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद लुप्त सी हो गई थी। इसी शक्ति से मराठा वीर सम्पूर्ण भारत पर छाने लगे। महाराष्ट्र से तो मुगलों को पहले ही उखाड़ दिया गया था। अब शेष भारत की बारी थी। सबसे पहले निज़ाम के होश ठिकाने लगाकर मराठा वीरों ने बची हुई चौथ और सरदेशमुखी की राशी को वसूला गया। दिल्ली में अधिकार को लेकर छिड़े संघर्ष में मराठों ने सैयद बंधुओं का साथ दिया। ७०,००० की मराठा फौज को लेकर हिन्दू वीर दिल्ली पहुँच गये। इससे दिल्ली के मुसलमान क्रोध में आ गये। इस मदद के बदले मराठों को सम्पूर्ण दक्षिण भारत से चौथ और सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार मिल गया।

मालवा के हिन्दू वीरों ने जय सिंह के नेतृत्व में मराठों को मुगलों के राज से छुड़वाने के लिए प्रार्थना भेजी क्योंकि उस काल में केवल मराठा शक्ति ही मुगलों के आतंक से देश को स्वतंत्र करवा सकती थी। मराठा वीरों की ७०,००० की फौज ने मुगलों को हरा कर भगवा झंडे से पूरे प्रान्त को रंग दिया।

बुंदेलखंड में वीर छत्रसाल ने अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। शिवाजी और उनके गुरु रामदास को वे अपना आदर्श मानते थे। वृद्धावस्था में उनके छोटे से राज्य पर मुगलों ने हमला कर दिया जिससे उन्हें राजधानी त्याग कर जंगलों की शरण लेनी पड़ी।इस विपत्ति काल में वीर छत्रसाल ने मराठों को सहयोग के लिए आमंत्रित किया। मराठों ने वर्षा ऋतु होते हुए भी आराम कर रही मुग़ल सेना पर धावा बोल दिया और उन्हें मार भगाया। वीर छत्रसाल ने अपनी राजधानी में फिर से प्रवेश किया।

मराठों के सहयोग से आप इतने प्रसन्न हुए कि आपने बाजीराव को अपना तीसरा पुत्र बना लिया और उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके राज्य का तीसरा भाग बाजीराव को मिला।

इसके पश्चात् गुजरात की ओर मराठा सेना पहुँच गई। मुगलों ने अभय सिंह को मराठों से युद्ध लड़ने के लिये भेजा। उसने एक स्थान पर धोखे से मराठा सरदार की हत्या तक कर दी पर मराठा कहाँ मानने वाले थे। उन्होंने युद्ध में जो जोहर दिखाए कि मराठा तल्वार की धाक सभी ओर जम गई। इधर दामा जी गायकवाड़ ने अभय सिंह के जोधपुर पर हमला कर दिया जिसके कारण उसे वापिस लौटना पड़ा। मराठों ने बरोडा और अहमदाबाद पर कब्ज़ा कर लिया। दक्षिण में अरकाट में हिन्दू राजा को गद्दी से उतार कर एक मुस्लिम वहाँ का नवाब बन गया था। हिन्दू राजा के मदद मांगने पर मराठों ने वहाँ पर आक्रमण कर दिया और मुस्लिम नवाब पर विजय प्राप्त की। मराठों को वहाँ से एक करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। इससे मराठों का कार्य क्षेत्र दक्षिण तक फैल गया।इसी प्रकार बंगाल में भी गंगा के पश्चिमी तट तक मराठों का विजय

- शेष पृष्ठ 6 पर

भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ व उपाय क्या है?

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

16 वीं लोकसभा के चुनाव ने भारत को एक महान् देशभक्त नेतृत्व श्री नरेन्द्र मोदी के रुप में प्रदान किया है, जिन्होंने काशी में भारत को जगद्गुरु बनाने की इच्छा का संकेत करते हुए कहा था, ''जब भारत जगद्गुरु था तब काशी नगर राष्ट्रगुरु था और यदि भारत को पुन: जगद्गुरु बनाना है तो काशी को राष्ट्रगुरु बनाना होगा।'' काशी को राष्ट्रगुरु बनने का संकेत स्पष्ट है कि भारत की प्राचीन वैदिक विरासत व देववाणी संस्कृत भाषा का पुनरोदय होने से ही यह राष्ट्र पुन: जगद्गुरु बन सकता है। इधर श्री मोदी के मन्त्रिमण्डल की एक सदस्या श्रीमती स्मृति ईरानी जिन पर भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय का बहुत महत्वपूर्ण दायित्व है, ने वैदिक साहित्य पढ़ाने की वकालत की है। यह देश के लिए बहुत ही शुभ संकेत है। यहाँ कुछ कथित प्रबुद्ध जनों को श्री मोदी के कथनों में परस्पर विरोध प्रतीत हो सकता है। उनकी दृष्टि में मोदी जी एक ओर अत्याधुनिक विज्ञान, तकनीक के द्वारा राष्ट्र को अमेरिका, चीन व यूरोपीय देशों की बराबरी पर लाने की बात करते हैं तो दूसरी ओर वे भारत की प्राचीन परम्परा के पुनरोदय की बात करते हैं। क्या यह परस्पर विरोध नहीं है?

अंग्रेजी भाषा के एकछत्र विश्वव्यापी शासन तथा वर्तमान विज्ञान व टैक्नोलोजी के इस युग में वेदादि की बात करना कहाँ तक युक्ति संगत है, वह भी वेदादि शास्त्र व संस्कृत भाषा के बल पर भारत को विश्व का गुरु बनाने का स्वप्न देखना व दिखाना कहाँ तक उचित है, यह अवश्यमेव विचारणीय है। वर्तमान विश्व में तो दूर की बात है, अपने देश में भी इस प्रकार की बातों पर प्रबुद्ध वर्ग विश्वास नहीं करता। मेरी दृष्टि में इसके दो कारण हैं। प्रथम यह कि भारत का नागरिक विशेषकर प्रबुद्ध युवा तन से भारतीय तथा मन व आत्मा से पूर्णत: मैकाले का भक्त हो चुका है। उसे भारतीयता की वह कोई बात अच्छी नहीं लगती जो पूर्व काल की संस्कृति, सभ्यता व शिक्षा की समर्थक हो। दूसरा कारण यह भी है कि भारतीय वैदिक विद्या वा संस्कृत भाषा की वकालत करने वालों ने कोई ऐसा महत्वपूर्ण चमत्कार वर्तमान समय में नहीं किया, जिसे पाश्चात्य विद्या विज्ञान के सम्मुख कुछ भी महत्व मिल सके। बड़े-2 कथित वैदिक विद्वान्, संस्कृत भाषा के पण्डित, दर्शनाचार्य सभी पाश्चात्य विज्ञान व टैक्नोलोजी के सम्मुख नत होकर उनका सगर्व प्रयोग कर रहे हैं। वेद, दर्शन आदि का नाम लेकर जो संस्थाएं चल रही हैं, जिन विद्वानों की आजीविका चल रही है, उनके बच्चे भी संस्कृत वा वैदिक विद्या को नहीं पढ़ते। पिता वा गुरु व नेता संस्कृत भाषा व आर्ष विद्या की बात तो करते हैं परन्तु पुत्र, शिष्य व अनुयायी अंग्रेजी भाषा व पाश्चात्य मैकाले की शैली की शिक्षा न केवल देश अपितु विदेश में जा-जाकर ग्रहण करते हैं, तब वेदादि शास्त्रों व संस्कृत भाषा को कौन पढ़ेगा और कैसे इससे भारत को विश्व के उच्च विकसित विज्ञान का गुरु बनाया जा सकेगा? यह बात गम्भीरता से सोचने का अवसर किसी के पास नहीं है। यदि श्री मोदी आधुनिक विज्ञान व टैक्नोलोजी का बहुआयामी विकास करके स्पर्धा में चीन, अमेरिका, फ्रांस, जापान व जर्मनी जैसे विकसित देशों से आगे जाकर भारत को जगद्गुरु बनाने की बात करते हैं, तब भी जगद्गुरु का स्वप्न पूर्ण नहीं होगा। भले ही हम स्वच्छ प्रशासन, प्रबल पुरुषार्थ व भ्रष्टाचार मुक्त समाज बनाकर विश्व में सर्वोत्कृष्ट कम्प्यूटर, अन्तर महाद्वीपीय मिसाइलें, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रॉन बम जैसे घातक अस्त्र बना लें। ऐलोपैथी चिकित्सा, अन्तरिक्ष विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि में हम क्रान्तिकारी विकास करके भारत की शिक्षा पद्धति को उच्चतम शिखर पर पहुँचा कर ऐसे विश्वविद्यालयों, आई.आई.टी. आई.आई.एम. व ऐम्स जैसे शिक्षण संस्थानों को विश्व के सर्वोत्कृष्ट स्थान दिलाने में कभी सफल हो जायें। हमारा 'इसरो' अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' को पीछे छोड़ दे और भले ही हम विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला 'सर्न' से बड़ी प्रयोगशाला बना कर संसार के सभी देशों के मार्ग दर्शक व नेता बन जायें परन्तु नैतिकता की दृष्टि से भारत को जगद्गुरु बनने हेतु यह पर्याप्त योग्यता व सामर्थ्य नहीं होगी। आज भारत को आर्थिक महाशक्ति व आध्यात्मिक महाशक्ति भी बनाने की चर्चा कुछ उत्साही महानुभाव विभिन्न चैनलों से करते रहते हैं परन्तु मुझे लगता है कि जगद्गुरु, महाशक्ति, आध्यात्मिक व वैदिक सम्पदा इन चार शब्दों का यथार्थ भाव अभी तक समझा नहीं गया है। सस्ते सुन्दर स्वप्न देखने व दिखाने से भारत जगद्गुरु नहीं बन पायेगा। हाँ, मैं मोदी जी सहित ऐसे सभी देशभक्तों की इच्छा व प्रयास की सराहना अवश्य करता हूँ कि देश में ऐसा एक प्रधानमंत्री तो बना जो देश के उत्कर्ष की, उसे जगद्गुरु बनाने की बात तो करता है। प्रबल इच्छा तो करता है। जब देश के नेतृत्व की प्रबल इच्छा हो और ईमानदारी से अफसरशाही उस पर अमल भी करे, देश की जनता पूर्ण सहयोग करे तो भारत का जगद्गुरु बनना असंभव तो नहीं है।

अब मैं उपर्युक्त उस बिन्दु पर आता हूँ कि देश को महान् वैज्ञानिक व आर्थिक शक्ति बनाने पर भी जगद्गुरु का पद हमारे देश को क्यों नहीं मिल सकता? इस विषय में मेरा मत है कि हम इन क्षेत्रों में जो भी उन्नति करेंगे, जो भी पढ़ेंगे वा पढ़ायेंगे, उन सब पर पश्चिमी वैज्ञानिकों व अर्थशास्त्रियों की ही छाया होगी। उन्हीं का ही पढ़ेंगे फिर भले ही हम उनसे आगे क्यों न बढ़ जायें। आज हमारी पीढ़ी जो भी पढ़ रही है, उसमें आयुर्वेद, हिन्दी, संस्कृत भाषा के अतिरिक्त कोई भी ऐसा विषय नहीं है, जिसका मूल प्राचीन भारतीय विद्या से सम्बन्ध हो, जिनकी पाठ्य पुस्तकों में प्राचीन भारतीय विद्वानों, ऋषियों का नाम भी विद्यमान हो। हाँ, राजनीति शास्त्र व समाजशास्त्र आदि की कुछ पुस्तकों में भगवान् मनु आदि का नाम मिल सकता है। वर्तमान विद्वानों में महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द आदि का नाम मिल सकता है। विज्ञान की पुस्तकों में सी.वी. रमन, सत्येन्द्रनाथ बोस, मेघनाथ साहा, होमी भाभा, जगदीशचन्द बसु आदि भारतीय वैज्ञानिक तथा विदेश में रहने वाले भारतीयों में से चन्द्रशेखर सुब्रह्मण्यम, हरगोविन्द खुराना आदि कुछ वैज्ञानिकों के नाम व उनके सिद्धान्त हम पढ़ सकते हैं परन्तु इनके वैज्ञानिक बनने के पीछे कोई भारतीय प्राचीन विज्ञान कारण नहीं था बल्कि ये उसी विद्या को पढ़े थे, जिसको हमारे देशभक्त मैकाले की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति नाम देकर निन्दा करते हैं। भारत में जो भी देशभक्त वा वेदभक्त कहाने वाले सामाजिक संगठन हैं, वे अपने विद्यालयों में वही पढ़ाते हैं, जिसकी वे मंच पर निन्दा करते हैं। आज वेद, दर्शन, ब्राह्मणग्रन्थ आदि का जो स्वरूप भारत में पढ़ा वा पढ़ाया जा रहा है, क्या उसके आधार पर हम ऐसे वैज्ञानिक उत्पन्न कर सकते हैं? यदि नहीं तो भारत को कैसे जगद्गुरु बनाया जा सकता है? ऐसी स्थिति में यह विचार करना आवश्यक है कि भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ क्या है? इस विषय पर मेरा विचार यह है कि भारत के जगद्गुरु का अर्थ जानने से पूर्व हम यह जानने का प्रयास करें कि भारत के भारत होने का अर्थ क्या है, आज भारत भारत रहा ही कहाँ है? वह तो आज इण्डिया बन चुका है। पहले यह आर्यावर्त्त था फिर भारत फिर हिन्दुस्तान और अब इण्डिया बन गया। हिन्दुस्तान तक भी यह भारत स्वदेशी विचारधारा की नींव पर खड़ा था परन्तु अब यहाँ स्वदेशी कुछ भी दिखाई नहीं देता। इस देश का नाम जब आर्यावर्त था तब यह देश वास्तव में जगद्गुरु था व चक्रवर्ती राष्ट्र भी था। जब चन्द्रवंशी सम्राट् दुष्यन्त पुत्र भरत का इस देश में शासन था तब भी यह भारत जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र था। इसी महान् राजा के नाम से इस देश का नाम भारत है, ऐसा सर्वविदित है। महाभारत काल तक भी भारत के पास यह पद विद्यमान था। आज हम जिन नालंदा व तक्षशिला विश्वविद्यालयों की बात करते हैं। ये सभी महाभारत काल से बहुत काल पश्चात् के हैं। इस कारण उस समय की विद्या इस देश के आदिकाल से लेकर महाभारत काल की विद्या की अपेक्षा अति न्यून थी। यद्यपि इस मध्यकाल में आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, नागार्जुन एवं ब्रह्मगुप्त जैसे अनेक वैज्ञानिक व गणितज्ञ हुए जो अपने समय के विश्व विख्यात् व्यक्ति थे। इस काल के संस्कृत भाषा के कवि व साहित्यकारों का मेरी दृष्टि में कोई महत्व इस कारण नहीं है क्योंकि ये सभी भले ही भाषा व व्याकरण के विद्वान् थे परन्तु सभी ने श्रृंगार रस में डूबकर भारत व मानवजाति को अश्लीलता की कीचड़ में ही धकेला है। गाली संस्कृत भाषा में दी जाये अथवा हिन्दी वा अंग्रेजी में परन्तु है तो अपराध ही। इन साहित्यकारों के हृदय में वेद व ऋषियों के सदाचार व ब्रह्मचर्य की शिक्षा नहीं होने से हर सदाचारी को इन्हें हेय दृष्टि से ही देखना चाहिए। दुर्भाग्य से आज संस्कृत साहित्य के नाम पर यही अपराध किया जा रहा है, जिससे संस्कृत भाषा का स्थान देववाणी के रूप में रहा ही नहीं है। इस कारण मेरा मत यह है कि जब तक भारत रामायण व महाभारत कालीन आर्य ऋषियों, देवों के महान् विज्ञान व तकनीक का विकास नहीं करेगा, उसे खोज नहीं सकेगा, तब तक हम भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न भी नहीं देख सकते। उस समय आयुर्वेद का जो उत्कर्ष था, वह आज की अत्यन्त विकसित ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति में भी नहीं है। युद्धरत योद्धाओं के घाव तत्काल भरने त्वचा का रंग रूप तत्काल ही पूर्ववत् करने की पद्धति आज कदाचित् विकसित नहीं है। श्रीराम व लक्ष्मण को नागपाश से मुक्त करने हेतु महान् आयुर्वेदाचार्य गरुड़ ने केवल हाथ के स्पर्श से न केवल उन्हें मूर्छा से मुक्त किया अपितु उनके घाव भरकर त्वचा को भी पूर्ववत् तत्काल ही कर दिया था। आज वैकी चिकित्सा पद्धति अवश्य है परन्तु इतनी त्वरित गति से चिकित्सा करना उसका सामर्थ्य नहीं है। उस समय योद्धाओं को चिकित्सालय में महीनों भर्ती रहने का कहीं वर्णन नहीं है। रावण के पुष्पक विमान की यह विशेषता कि विधवा के बैठने पर विमान उड़ ही नहीं पाता था, यह कौन सी तकनीक थी? वायव्य अस्त्र, आग्नेय अस्त्र, पर्जन्य अस्त्र, मोहिनी अस्त्र, वैष्णवास्त्र, आसुर अस्त्र, माहेश्वर अस्त्र, ऐन्द्रास्त्र, पाशुपत अस्त्र, ब्रह्मास्त्र, सुदर्शन चक्र, वज्र आदि अस्त्र न केवल महाशक्तिशाली थे अपितु इनमें से कुछ प्रयोक्ता के विचारों का अनुसरण करते हुए सीमित वा व्यापक लक्ष्य निर्धारित करने की दैवी तकनीक से सम्पन्न भी थे। यह तकनीक आज नहीं है कि अणुअस्त्र को इस विचार से छोड़ा जाये कि वह एक लक्षित व्यक्ति का ही विध्वंस करेगा, अन्य को कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। महात्मा नारायण का नारायणास्त्र जिसका प्रयोग अश्वत्थामा ने पाण्डवों पर किया था, वह निरस्त्र होकर शान्त खड़े रहने पर कोई क्षति नहीं पहुँचाता था और उसका सामना करने पर उग्रतर होता जाता था तथा प्रत्येक प्रयोक्ता के द्वारा पुन: प्रयुक्त नहीं किया जा सकता था, यह आर्यों की तकनीक अब किस देश के पास है? देवों, गन्धर्वों, असुरों की विमान विद्या की समता आज कौन सा देश कर सकता है? उस समय प्रत्येक अस्त्र का प्रतिरोधक अस्त्र होता था। आज वह किस देश के पास है? पिछले कुछ वर्ष पूर्व जयपुर के ऑयल डिपो में आग लगी और भारत के पेट्रोलियम मंत्री ने असहाय होकर कहा था कि हम आग के स्वत: शान्त होने की प्रतीक्षा ही कर सकते हैं। आज देश के पास आर्यों का पर्जन्य अस्त्र होता तो तत्काल वृष्टि कराके आग को रोक सकता था।

- शेष अगले अंक में

प्रथम पृष्ठ का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि ....

स्थापना का कार्य प्रारंभ होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रत्येक प्रान्त में तीन वर्षों की अवधि में एक आर्य महासम्मेलन किए जाने का प्रस्ताव पारित किया है।

आर्य परिवारों के आपसी मेल जोल तथा विवाह आदि सम्बन्धों को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक प्रांत में 'आर्य परिवार-वैवाहिक परिचय सम्मेलनों के आयोजन का प्रस्ताव किया गया।

प्रांतीय सभाओं द्वारा प्रान्तीय क्षेत्रों में पुस्तक मेलों के किए गए आयोजनों में सार्वदेशिक सभा उन्हें हर प्रकार का सहयोग प्रदान करेगी जिससे वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार बढ़ें और वेद ज्ञान की रश्मि हर-घर पहुँचे क्योंकि यह प्रत्येक मानव का मौलिक अधिकार है। यह अधिकार सबको प्राप्त हो इस महान् कार्य के लिए सार्वदेशिक सभा कृत संकल्प है।

प्रांतीय सभा के कार्यालयों के विधिवत् निरंतर संचालन हेतु सार्वदेशिक सभा प्रांतीय सभाओं को उपयुक्त सहयोग करेगी।

जिन सभाओं में अब तक विधिवत् कार्यालयों का संचालन नहीं किया जा रहा अथवा कार्यालय नहीं है। वहाँ पर प्रांतीय सभा द्वारा कार्यालय विधिवत् संचालित करने हेतु आवश्यक सहयोग प्रदान करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने आश्वासन दिया है।

सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों को व्यापक रूप से बढ़ाने हेतु, अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन एक वृहद् और विशिष्ट साधन एवं कर्त्तव्य बताया और इसी कड़ी में 27, 28 व 29 नवम्बर 2015 को आस्ट्रेलिया के सिड्नी शहर में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए श्री योगेश आर्य जी को आस्ट्रेलिया सिड्नी सम्मेलन के संयोजक घोषित किए गए।

भारत में पुस्तक मेलों की सफलता के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तक मेलों में भाग लेने की संस्तुति की है। अन्तर्राष्ट्रीय पाठकों तक अंग्रेजी वैदिक साहित्य पहुँचाने के लिए पुरुषार्थ और सहभागिता की जाएगी, क्योंकि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा वेद का सन्देश 'कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्' के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयासरत है ।

देश की समस्त आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आचार्य कुलों तथा गुरुकुलों में यज्ञ पद्धति के भिन्न-भिन्न होने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सार्व. सभा ने पूर्व के निर्णयों के आधार पर 'यज्ञ-पद्धति' के प्रकाशन का प्रस्ताव पारित किया जिससे सभी आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों में यज्ञ में एकरूपता प्रदान हो।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक में लिए गए उपरोक्त सभी निर्णय हर्ष ध्वनि से पारित हुए सभी अंतरंग सदस्यों की सहमति एवं अनुमोदन से सभा की कार्यवाही शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुई।

सभा की अध्यक्षता कर रहे आचार्य बलदेव जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज के संगठन की एकता के प्रयास में कोई कसर शेष नहीं रखी जाएगी। महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्यों और आर्य समाज के प्रचार प्रसार के कार्यों को मिल जुलकर, संगठित होकर पूरा करेंगे। – ***विनय आर्य, उपमन्त्री***

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 28 मार्च, 2015 में उपस्थित सभा अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों का सामूहिक चित्र - बाएं से दाएं (प्रथम पंक्ति) डॉ. ब्रह्ममुनि जी, साध्वी उत्तमा यति, प्रकाश आर्य, सुरेशचन्द्र अग्रवाल, आचार्य बलदेव, महाशय धर्मपाल, आचार्य विजयपाल, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती। (दूसरी पक्ति बाएं से दाएं) विनय आर्य, वाचोनिधि आर्य, राव हरिश्चन्द्र आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, रमेन्द्र गुप्त, यशपाल जानवानी, मा. रामपाल, गंगा प्रसाद, भारत भूषण त्रिपाठी, राजेन्द्र जी (एम.डी.एच) राजेन्द्र दुर्गा, देवराज आर्य, देवेन्द्र पाल वर्मा, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, भारतभूषण आर्य, डॉ. राधाकृष्ण वर्मा। (तृतीय पंक्ति - बाए से दाए) योगेश आर्य (आस्ट्रेलिया), आचार्य सत्यवीर शास्त्री, आचार्य सनत कुमार, धर्मपाल आर्य, आचार्य अंशुदेव, डॉ. विनय विद्यालंकार, सुधीर आर्य, दीनानाथ वर्मा, राजीव आर्य, जोगेन्द्र खट्टर एवं अन्य पदाधिकारी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में
अध्यापिकाओं एवं विद्यार्थियों की कार्यशाला का शुभारम्भ

आर्य विद्या परिषद् , दिल्ली की ओर से इस सत्र में अध्यापिकाओं व विद्यार्थियों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित होनी निश्चित की गई है। इसी श्रृंखला में 17 अप्रैल (शुक्रवार) को रघुमल आर्य कन्या सीनियर, सैकण्डरी, स्कूल राजा बाजार, कनॉट प्लेस में कक्षा नौवीं से बारहवीं तक की छात्राओं के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया।

परिषद् के प्रस्तोता व प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर इस कार्यशाला में छात्राओं को जीवन में उन्नति के मूल सिद्धांत समझाए। श्री रैली जी ने उपस्थित छात्राओं को ईश्वर में दृढ़ विश्वास को समझाते हुए जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखने, अपना लक्ष्य निर्धारित करके कार्य करना, अपना व्यक्तित्व, चरित्र व आदर्श ऊँचे रखना, अपने व्यक्तित्व की अलग पहचान बनाना, विनम्र बनना और सदैव समाज के उत्थान के लिए कार्य करते रहने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर श्रीमती वीना आर्या, विद्यालय के प्रबंधक श्री संजय कुमार जी, प्रधानाचार्या श्रीमती किरण तलवार व अध्यापिकाएँ उपस्थित थीं।

– ***सरोज यादव, संयोजिका***

दैनिक यज्ञ के व्रती : श्री सुरेन्द्र कुमार रैली

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली (राज्य) के उप प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली आर्य परिवार में जन्में वैदिक संस्कारों में पले बढ़े। माता स्व. श्रीमती अमृता देवी रैली जी ने जवाहर नगर दिल्ली के अग्निहोत्री परिवार से प्रेरणा प्राप्त कर पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी के समक्ष अपने घर में दैनिक यज्ञ करने की इच्छा प्रकट की। पुत्र ने माता जी की इस महान् इच्छा को तत्काल अंगीकार किया और 16 जुलाई 1976 से दैनिक यज्ञ प्रारंभ कर दिया और आज तक निरंतर यह क्रम चल रहा है। श्री रैली जी ने घर पर ही यज्ञशाला का निर्माण कराया और अपने जीवन में सुख समृद्धि ऐश्वर्य को प्राप्त करते हुए जीवन यापन ही नहीं कर रहे अपितु आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं अन्य संस्थाओं के माध्यम से समाज सुधार के कार्यों में संलग्न है। वास्तव में ये एक प्रेरणा पुरुष है। आर्य जनों को प्रेरणा प्राप्त कर यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कार्यों का तत्काल अनुसरण करना चाहिए।

विदित हो कि श्री रैली जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की योजना **'घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ' में प्रीत विहार क्षेत्र के 1000 नए परिवारों में यज्ञ कराने का संकल्प लिया है।**

पृष्ठ 3 का शेष

अभियान जारी रहा एवं बंगाल से भी उचित राशि वसूल कर मराठे अपने घर लौटे। मैसूर में भी पहले हैदर अली और बाद में टीपू सुल्तान से मराठों ने चौथ वसूली की थी।

दिल्ली के कागजी बादशाह ने फिर से मराठों का विरोध करना आरंभ कर दिया। बाजीराव ने मराठों की फौज को जैसे ही दिल्ली भेजा, उनके किलों की नीवें मराठा सैनिकों की पदचाप से हिलने लगी। आखिर में अपनी भूल और प्रयाश्चित करके मराठा क्षत्रियों से उन्होंने पीछा छुड़ाया। अहमद शाह अब्दाली से युद्ध के काल में ही मराठा उसका पीछा करते हुए सिंध नदी तक पहुँच गये थे। पंजाब की सीमा पर कई शताब्दियों के मुस्लिम शासन के पश्चात् मराठा घोड़े सिंध नदी तक पहुँच पाए थे। मराठों के इस प्रयास से एवं पंजाब में मुस्लिम शासन के कमजोर होने से सिख सत्ता को अपनी उन्नति करने का यथोचित अवसर मिला जिसका परिणाम आगे महाराजा रंजीत सिंह का राज्य था। इस प्रकार सिंध के किनारों से लेकर मदुरै तक, कोंकण से लेकर बंगाल तक मराठा सरदार सभी प्रान्तों से चौथ के रूप में कर वसूल करते थे, स्थान स्थान पर अपने विरुद्ध उठ रहे विद्रोहों को दबाते थे और भगवा पताका को फहरा कर हिन्दू पद पादशाही को स्थिर कर रहे थे। इन सब प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं कि करीब एक शताब्दी तक मराठों का भारत देश पर राज रहा जोकि विशुद्ध हिन्दू राज्य था।

थल से जल तक : वीर शिवाजी के समय यही मराठा फौज अपनी जल सेना को मजबूत करने में लगी हुई थी। इस कार्य का नेतृत्व कान्होजी आंग्रे के कुशल हाथों में था। कान्होजी को जंजिरा के मुस्लिम सिद्दी, गोआ के पुर्तगाली, बम्बई के अंग्रेज और डच लोगों का सामना करना पड़ता था जिसके लिए उन्होंने बड़ी फौज की भर्ती की थी। इस फौज के रख रखाव के लियी आप उस रास्ते से आने जाने वाले सभी व्यापारी जहाजों से कर लेते थे। अंग्रेज यही काम सदा से करते आये थे इसलिए उन्हें यह कैसे सहन होता। बम्बई के समुद्र तट से १६ मील की दूरी पर खाण्डेरी द्वीप पर मराठों का सशक्त किला था। इतिहासकार कान्होजी आंग्रे को समुद्री डाकू के रूप में लिखते हैं जबकि वे कुशल सेनानायक थे। १७१७ में बून चार्ल्स बम्बई का गवर्नर बन कर आया। उसने मराठों से टक्कर लेने की सोची। उसने जहाजों का बड़ा बेड़ा और पैदल सेना तैयार कर मराठों के समुद्री दुर्ग पर हमला कर दिया। अंग्रेजों ने अपने जहाजों के नाम भी रिवेंज, विक्ट्री, हॉक और हंटर आदि रखे थे। पूरी तैयारी के साथ अंग्रेजों ने मराठों के दुर्ग पर हमला किया पर मराठों के दुर्ग कोई मोम के थोड़े ही बने थे। अंग्रेजों को मुँह की खानी पड़ी। अगले साल फिर हमला किया फिर मुँह की खानी पड़ी। तंग आकर इंग्लैंड के महाराजा ने कोमोडोर मैथ्यू के नेतृत्व में एक बड़ा बेड़ा मराठों से लड़ने के लिए भेजा। इस बार पुर्तगाल की सेना को भी साथ में ले लिया गया। बड़ा भयानक युद्ध हुआ। कोमोडोर मैथ्यू स्वयं आगे बढ़ बढ़कर नेतृत्व कर रहा था। मराठा सैनिक ने उसकी जांघ में संगीन घुसेड़ दी, उसने दो गोलियाँ भी चलाई पर वह खाली गई क्योंकि मराठों के आतंक और जल्दबाजी में वह उसमें बारूद ही भरना भूल गया। अंत में अंग्रेजों और पुर्तगालियों की संयुक्त सेना की हार हुई। दोनो एक दूसरे को कोसते हुए वापिस चले गए। डच लोगों के साथ युद्ध में भी उनकी यही गति बनी। मराठे थल से लेकर जल तक के राजा थे।

ब्रह्मेन्द्र स्वामी और सिद्दी मुसलमानों का अत्याचार : ब्रह्मेन्द्र स्वामी को महाराष्ट्र में वही स्थान प्राप्त था जो स्थान शिवाजी के काल में समर्थ गुरु रामदास को प्राप्त था। सिद्दी कोंकण में राज करते थे मराठों के विरुद्ध पुर्तगालियों, अंग्रेजों और डच आदि की सहायता से उनके इलाकों पर हमले करते थे। इसके अलावा उनका एक पेशा निर्दयता से हिन्दू लड़के और लड़कियों को उठा कर ले जाना और मुसलमान बनाना भी था। इसी सन्दर्भ में सिद्दी लोगों ने भगवान परशुराम के मंदिर को तोड़ डाला। यह मन्दिर ब्रह्मेन्द्र स्वामी को बहुत प्रिय था। उन्होंने निश्चय किया कि वह कोंकण देश में जब तक वापिस नहीं आयेंगे जब तक उनके पीछे अत्याचारी मलेच्छ को दंड देने वाली हिन्दू सेना नहीं होगी क्योंकि सिद्दी लोगों ने मंदिर और ब्राह्मण का अपमान किया हैं। स्वामी जी वहाँ से सतारा चले गए और अपने शिष्यों शाहू जी और बाजीराव को पत्र लिख कर अपने संकल्प की याद दिलवाते रहे। मराठे उचित अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। सिद्दी लोगों का आपसी युद्ध छिड़ गया, बस मराठे तो इसी की प्रतीक्षा में थे। उन्होंने उसी समय सिद्दियों पर आक्रमण कर दिया। जल में जंजिरा के समीप सिद्दियों के बेड़े पर आक्रमण किया गया और थल पर उनकी सेना पर आक्रमण किया गया। मराठों की शानदार विजय हुई और कोंकण प्रदेश मराठा गणराज्य का भाग बन गया। ब्रह्मेन्द्र स्वामी ने प्राचीन ब्राह्मणों के समान क्षत्रियों की पीठ थप-थपाकर अपने कर्तव्य का निर्वहन किया था। वैदिक संस्कृति ऐसे ही ब्राह्मणों की त्याग और तपस्या के कारण प्राचीन काल से सुरक्षित रही है।

गोआ में पुर्तगाली अत्याचार : गोआ में पुर्तगाली सत्ता ने भी धार्मिक मतान्धता में कोई कसर न छोड़ी थी। हिन्दू जनता को ईसाई बनाने के लिए दमन की नीति का प्रयोग किया गया था। हिन्दू जनता को अपने उत्सव बनाने की मनाही थी। हिन्दुओं के गाँव के गाँव ईसाई न बनने के कारण नष्ट कर दिए गये थे। सबसे अधिक अत्याचार ब्राह्मणों पर किया गया था। सैकड़ों मंदिरों को तोड़ कर गिरिजाघर बना दिए गए थे। कोंकण प्रदेश में भी पुर्तगाली ऐसे ही अत्याचार करने लगे थे। ऐसे में वहां की हिन्दू जनता ने तंग आकर बाजीराव से गुप्त पत्र व्यवहार आरंभ किया और गोवा के हालात से उन्हें अवगत करवाया। मराठों ने कोंकण में बड़ी सेना एकत्र कर ली और समय पाकर पुर्तगालियों पर आक्रमण कर दिया। उनके एक एक कर कई किलों पर मराठों का अधिकार हो गया। पुर्तगाल से अंटोनियो के नेतृत्व में बेड़ा लड़ने आया पर मराठों के सामने उसकी एक न चली। वसीन के किले के चारों और मराठों ने चिम्मा जी अप्पा के नेतृत्व में घेरा दाल दिया था। वह घेरा कई दिनों तक पड़ा रहा था। अंत में आवेश में आकार अप्पा जी ने कहा कि तुम लोग अगर मुझे किले में जीते जी नहीं ले जा सकते तो कल मेरे सर को तोप से बांध कर उसे किले की दीवार पर फेंक देना कम से कम मरने के बाद तो मैं किले मैं प्रवेश कर सकूँगा। वीर सेनापति के इस आह्वान से सेना में अद्वितीय जोश भर गया और अगले दिन अपनी जान की परवाह न कर मराठों ने जो हमला बोला की पुर्तगाल की सेना के पाँव ही उखड़ गए और किला मराठों के हाथ में आ गया। यह आक्रमण गोआ तक फैल जाता पर तभी उत्तर भारत पर नादिर शाह के आक्रमण की खबर मिली। उस काल में केवल मराठा संघ ही ऐसी शक्ति थी जो इस प्रकार की इस राष्ट्रीय विपदा का प्रतिउत्तर दे सकती थी। नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर १५,००० मुसलमानों को अपनी तलवार का शिकार बनाया। उसका मराठा पेशवा बाजीराव से पत्र व्यवहार आरंभ हुआ। जैसे ही उसे सूचना मिली की मराठा सरदार बड़ी फौज लेकर उससे मिलने आ रहे हैं वह दिल्ली को लुटकर, मुगलों के सिंघासन को उठा कर अपने देश वापिस चला गया।

पहाड़ी चूहे से महाराजाधिराज तक : दिल्ली में अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण का काल में रोहिल्ला सरदार नजीब खान ने दिल्ली में बाबर वंशी शाह आलम पर हमला कर उसकी आँखें फोड़ दी और उस पर भयानक अत्याचार किये। मराठा सरदार महाजी सिंधिया ने दिल्ली पर हमला बोल कर नजीब खा को उसके किये की सजा दी। इतिहास गवाह हैं कि जिस औरंगजेब ने वीर शिवाजी की वीरता से चिढ़ कर अपमानजनक रूप से उन्हें पहाड़ी चूहा कहा था उसी औरंगजेब के वंशज ने मराठा सरदार को पूना के पेशवा के लिए ''किले मुतालिक अर्थात महाराजाधिराज' से सुशोभित किया। औरंगजेब जिसे आलमगीर भी कहा जाता हैं ने अपनी ही धर्मान्ध नीतियों से अपने जीवन में इतने शत्रु एकत्र कर लिए थे जिसका प्रबंध करने में ही उसकी सारी शक्ति, उसकी आयु खत्म हो गई।

पहले पानीपत के मैदान में मराठों को हार का सामना करना पड़ा पर इससे अब्दाली की शक्ति भी क्षीण हो गई और अब्दाली वहीं से वापिस अपने देश चला गया। कालांतर में मराठों के आपसी टकराव ने मराठा संघ की शक्ति को सीमित कर दिया जिससे उनकी १८१८ में अंग्रेजों से युद्ध में हार हो गई और हिन्दू पद पादशाही का मराठा स्वराज्य का सूर्य सदा सदा के लिए अस्त हो गया।

इतिहास इस बात का भी साक्षी हैं कि जब भी किसी जाति पर अत्याचार होते है, उनका अन्याय पूर्वक दमन किया जाता हैं तब तब उसी जाति से अनेक शिवाजी, अनेक प्रताप, अनेक गुरु गोबिंद सिंह उठ खड़े होते हैं जो अत्याचारी का समूल नष्ट कर देते हैं।केवल इस्लामिक आक्रान्ता और मुग़ल शासन से इतिहास की पूर्ति कर देना इतिहास से साथ खिलवाड़ के समान हैं जिसके दुष्परिणाम अत्यंत दूरगामी होंगे।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं आर्य समाज बाजार रानी बाग के तत्त्वावधान में

विद्यार्थियों के संस्कार, राष्ट्र भक्ति एवं चरित्र निर्माण हेतु

34 वाँ वैचारिक क्रान्ति शिविर

17 मई से 31 मई 2015 : आर्य समाज मंदिर मेन बाजार रानी बाग, दिल्ली

उद्घाटन समारोह- रविवार 17 मई 2015 सायं 6 बजे

यज्ञोपवीत संस्कार एवं संकल्प समारोह - रविवार 24 मई 2015 प्रात: 8 बजे

समापन समारोह- शनिवार, 30 मई 2015 सायं 5 बजे

विशेष : लगभग पिछले 46 वर्षो से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, भारत वर्ष के अनेक ग्रामीण एवं वनवासी क्षेत्रों जैसे आसाम, नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, उड़ीसा एवं राजस्थान इत्यादि प्रांतों के अशिक्षित लोगों में शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराने हेतु कार्यरत है। संघ द्वारा लगाए जाने वाले इस वार्षिक शिविर का मुख्य प्रयोजन है कि अनेक प्रांतों के ग्रामीण क्षेत्रों से कुछ युवक-युवतियों को बुलाकर यहाँ दिल्ली में 15 दिनों के शिविर में अपने पास रख उन्हें भारतीय संस्कृति का बोध कराकर इनके हृदय में राष्ट्रीय प्रेम एवं चरित्र निर्माण की भावना जागृत कर सकें, जिससे वे विविध प्रलोभनों और मिथ्या आकर्षणों से बचकर अपनी संस्कृति और गौरव की स्वयं रक्षा करें।

आप सबसे निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर वनवासी कार्यकर्ताओं को अपना आशीर्वाद देवें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल	जोगेन्द्र खट्टर	अंजना चावला	यज्ञदत्त आर्य
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान, आ.स.	मन्त्री, आ.स.

आर्य वीर दल, राजस्थान का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर

17 मई से 23 मई 2015 तक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल की राजस्थान प्रान्तीय ईकाई का प्रांत स्तरीय आवासीय, योग प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर (17 मई से 23 मई 2015) को ऋषि उद्यान, अजमेर में होना सुनिश्चित किया गया है। इस शिविर में सैकड़ों बालक, गुरुकुलीय दिनचर्या में रहकर, योग-व्यायाम, यज्ञ, स्वास्थ्य, संस्कृति, वेद, विज्ञान एवं अस्त्र शस्त्र विधाओं का सुयोग्य शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। न्यूनतम 14 वर्ष की आयु का स्वस्थ बालक ही शिविर में भाग लें सकेंगे। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें - ***श्री भवदेव जी शास्त्री (मो. 9001434484)***

प्रवेश सूचना

99 वर्षों से मानव सेवा में अहर्निश संलग्न आर्षपाठविधि का नि:शुल्क शिक्षा केन्द्र व स्वामी ओमानन्द सरस्वती की कर्मभूमि

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर

लिखित प्रवेश परीक्षा तिथि 3 व 17 मई, 7 व 21 जून 2015
अपने बच्चों के प्रवेश हेतु अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें –
आचार्य विजयपाल योगार्थी, प्रधानाचार्य (मो. 9416055044)

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया

राजस्थान राज्य के अलवर जिले में दिल्ली से 100किमी. एवं जयपुर से 150 किमी. की दूरी पर स्थित यह गुरुकुल कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। आप गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें –
आचार्य प्रेमलता (मो. 09416747308)

गुरुकुल प्रभात आश्रम

प्राचीन वैदिक परम्परा के संवाहक **गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ,** उत्तर प्रदेश में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश-परीक्षा 26 जून से 30 जून 2015 तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पञ्चम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं आयु 10 वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही होगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें –
आचार्य, मो. 09758747920,09719325677

आर्य समाज शाहजहाँपुर का 138 वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज टाउन हाल शाहजहाँपुर का 138 वाँ वार्षिकोत्सव 10 से 12 अप्रैल 2015 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान्, आचार्यों ने वेद, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों से उपस्थित जिज्ञासु श्रोताओं को अवगत कराया जिनमें मुख्य रूप से आचार्य उष बुंध (राज), पं. भानु प्रकाश बहेड़ी श्रीमती प्रभा शास्त्री बरेली, पं. राम बहादुर शास्त्री , बहादुर शास्त्री शाहजहांपुर उपस्थित रहे। – ***राजेश कुमार आर्य, मंत्री***

स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

वेद प्रचारिणी सभा प्रयाग के तत्त्वावधान में आयोजित आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह आर्य समाज चौक के विशाल सभागार में 22 मार्च 2015 को सम्पन्न हुआ। समारोह का उद्घाटन माननीय विधायक श्री सत्यवीर जी ने किया। मुख्य अतिथि माननीय पूर्व सांसद श्री शैलेन्द्र कुमार जी थे। इस अवसर पर आर्य विद्यालय के निर्धन छात्रों को ड्रेस वितरित की गई। 11 आर्य भाई बहिनों का सम्मान किया गया। इन कार्यों में श्रीमती सुभाष राठी विधि परामर्शदात्री, उच्च न्यायालय की विशेष सहभागिता रही। प्रयाग के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. श्याम सुन्दर शर्मा गायिका डॉ. प्रतिभारानी शर्मा ने अपने मधुर स्वर व संगीत से उपस्थितजन समुदाय का मन मोह लिया।
– ***डॉ. एस. के. राठी, मंत्री***

आर्य समाज लक्ष्मी नगर का 49वां वार्षिकोत्सव एवं सरल आध्यात्मिक शिविर

दिनांक 30 अप्रैल से 3 मई 2015
शिविर संचालक:- स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक (रोजड़ गुजरात)
यज्ञ-प्रवचन : प्रात: 7 से 8:30 बजे
सायं काल 7:30 से 9बजे
समापन समारोह : 3 मई 2015
यज्ञ-भजन-प्रवचन : प्रात: 8 से 12 बजे
– ***अनिल कुमार, मंत्री, 9999962242***

नव वर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज दुर्गापुरी विस्तार के तत्त्वावधान में ज्योतीश्वर मंदिर के प्रांगण में 13 अप्रैल 2015 को सम्पन्न हुआ जिसमें प्रमुख वक्ता आर्य विदुषी सविता शास्त्री जी एवं भजनोपदेशक श्री बच्चू सिंह ने भजनोपदेश का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर अनेक समाजसेवी एवं समाज के प्रबुध व्यक्ति उपस्थित रहे। – ***नरेन्द्र कुमार आर्य, मंत्री***

वेद प्रचार मंडल जींद के तत्त्वावधान में शहीदी दिवस समारोह

वेद प्रचार मंडल जींद के तत्त्वावधान में दिनांक 27 मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं शहीदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. सुरेन्द्र कुमार (कुलपति गु.का. वि.वि. हरिद्वार, मुख्यातिथि श्री धर्मवीर दहिया थे।

आर्ष गुरुकुल कालवा के आचार्य श्री राजेन्द्र जी एवं अन्य विद्वानों ने नवसंत्सर, आर्य समाज स्थापना दिवस तथा शहीद दिवस पर अपने विचार व्यक्ति किए। पं. तेजवीर आर्य ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। – ***रमेश आर्य, पूर्व मन्त्री***

आर्य वीरांगना दल की संचालिका नियुक्त

नवसंत्सर के शुभ अवसर पर आर्य वीर दल जयपुर के तत्त्वावधान में राजा पार्क स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा भवन में यज्ञ एवं भजन का आयोजन किया गया। समारोह में प्रान्तीय आर्य वीर दल के संचालक आचार्य देवेन्द्र शास्त्री द्वारा श्रीमती दुर्गा शर्मा को प्रातीय आर्य वीरांगना दल की संचालिका के पद पर नियुक्ति की घोषणा तथा नियुक्ति पत्र एवं नियुक्ति चिह्न प्रदान किए। हरिद्वार से पधारे स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा श्रीमती शर्मा को शपथ ग्रहण करवायी गई। इस अवसर श्रीमती दुर्गा शर्मा ने संगठन को सबल बनाने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करने का व्रत लिया।
– ***भवदेव शास्त्री, मंत्री***

आर्य विद्या परिषद दिल्ली की बैठक का आयोजन

आर्य विद्या परिषद, दिल्ली की बैठक 27 अप्रैल को प्रात: 9 बजे, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल आर्य समाज न्यू मोती नगर में आयोजित की गई है। दिल्ली के सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारीगण अवश्य भाग लें। – **सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता**

आर्य समाज डी ब्लाक जनकपुरी का वार्षिकोत्सव

23 से 26 अप्रैल 2015 तक
बृहद्यज्ञ : श्री सोमदेव शास्त्री
प्रवचन: आचार्य उमेश चन्द जी कुलश्रेष्ठ
भजन : श्रीमती विद्यावती जी
समापन समारोह : 26 अप्रैल 2015
– ***कर्मयोगी, मंत्री***

शोक समाचार

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती का निधन

वैदिक धर्म के सुप्रसिद्ध प्रचारक स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती (पंडित देशपाल दीक्षित) जी का लम्बी बीमारी के कारण उनकी भतीजी के पास सिमडेगा महाराष्ट्र में उनका निधन हो गया। वे 83 वर्ष के थे। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। शोक सभा आर्य समाज सिमडेगा में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती गुरुकुल आमसेना की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 30%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – हैल्प लाइन

समस्या समाधान/जानकारी हेतु किससे सम्पर्क करें?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली ने दिल्ली की आर्यसमाजों/आर्य शिक्षण संस्थाओं/आर्यजनों तथा आर्यसन्देश के माननीय सदस्यों के लिए हैल्पलाइन सुविधा आरम्भ की है। आप अपनी समस्या/सम्बन्धित जानकारी के लिए दोपहर 12:30 से सायं 7:30 बजे तक किसी भी कार्य दिवस में निम्न महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि आपकी समस्या सुनी नहीं जाती है तो कृपया अपनी समस्या तथा किससे सम्पर्क किया गया, उसका विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें-

वैदिक प्रकाशन/विक्रय विभाग –	श्री विजय आर्य (9540040339)
आर्यसन्देश न मिलने पर –	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
भजनोपदेशक/उपदेशक सेवा –	श्री ऋषिदेव आर्य (9540040388)
मुकदमा/कानूनी सहायता –	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)
वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन हेतु-	श्री अर्जुन देव चड्ढा (9414187428)
वैवाहिक परिचय आवेदन/जानकारी हेतु –	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
दशांश-वेद प्रचार/प्रशासनिक कार्य –	श्री अशोक कुमार (9540040322)

– ***महामन्त्री***

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23/24 अप्रैल, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 अप्रैल, 2015

''घर-घर यज्ञ -हर घर यज्ञ''

'सुख समृद्धि हेतु यज्ञ' योजना के कार्यकर्त्तागण से हुए साक्षात्कार से प्रतिफल यह हुआ कि इस योजना का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ रहा है। कार्यकर्त्ताओं के द्वारा घर-घर जाकर नए परिवारों को यज्ञ से जोड़ने का कार्य यथा सामर्थ्य कर रहें हैं। कार्यकर्त्ताओं के साक्षात्कार के कुछ अंश 'आर्य संदेश' के गतांक में प्रकाशित हो चुका हैं। जो महानुभाव वर्ष के अपने 12 नए परिवारों से सम्पर्क बना यज्ञ का अनुष्ठान कराएँगे उनका विवरण फोटो सहित आर्य सन्देश में प्रकाशित किया जाएगा जिससे अन्य आर्य जन भी प्रेरणा लेकर यज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार में अपना सहयोग दें सके। सुख समृद्धि यज्ञ-योजना के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि -यज्ञ के नए परिवारों को जोड़े और इसकी सूचना दिल्ली सभा को प्रेषित करें। इस कार्य में जो भी बाधा अथवा न्यूनता अनुभव की जाए अथवा कोई सुभाव देना है तो सभा से सम्पर्क करें। सभा के **व्हाट्स एप नं. 9540045898** पर एस.एम.एस करें। जिससे प्रचार कार्य में आई बाधाओं को दूर कर, प्रचार कार्य को गति प्रदान की जा सके। यज्ञ हेतु सभा पुरोहित **ब्र.श्री सत्यप्रकाश आर्य जी से मो.9650183335** पर संपर्क करें तथा वैदिक साहित्य क्रय करने हेतु सभा विक्रय केन्द्र प्रभारी **श्री विजय आर्य जी से मो. 9540040339** पर सम्पर्क करें।

- सम्पादक

प्रतिष्ठा में,

''योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर''

आर्य केन्द्रीय सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में कार्यकर्त्ता योग साधना व सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर का आयोजन 1 जून से 7 जून 2015 तक गुरुकुल पौंधा देहरादून में किया जा रहा है। प्रस्थान : 15 हनुमान रोड नई दिल्ली से बस द्वारा 30 मई 2015 रात्रि 9:30 बजे तथा गुरुकुल पोंधा से वापिसी 7 जून 2015 को सायं 4 बजे। अनुमानित किराया 700/- रु. प्रति सदस्य होगा। भोजन एवं आवास नि:शुल्क रहेगा। शिविर में उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा योग साधना एवं सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय की व्यवस्था रहेगी। स्थान (सीट) सीमित है, इच्छुक सदस्य निम्न अधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

1. श्री ओम प्रकाश आर्य (9540077858) 2. श्री सुखबीर सिंह आर्य- (9540012175), 3. श्री एस. पी. सिंह (9540040324)

प्रथम पृष्ठ का शेष

कश्मीर भारत का अभिन्न ....

ऐसे छद्मवेशी देशद्रोहियों पर सख्त कार्यवाही करते हुए कठोर दण्ड दिया जाए तभी भारत अखण्ड एवं सुरक्षित रह सकेगा। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, कश्मीर में जो हुआ वह देश द्रोह है, जिसे आर्यसमाज कभी सहन नहीं करेगा।

जब 1990 में कश्मीरी हिन्दुओं को घाटी से जबरदस्ती निकाला जा रहा था, आखिर तब कहां थे ये 'शान्ति के रहनुमा स्वामी'। दर-दर की ठोकरे खाकर जब हमारे ये भाई देश के विभिन्न भागों में खानाबदोश की जिन्दगी जी रहे थे और अब भी जीते आ रहे हैं, क्या उनके पास भी आंसू बहाने और दो शब्द सहानुभूति के कहने के लिए गए कभी ये छद्मवेश!

शर्म! शर्म!! शर्म!!!

- प्रकाश आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रमाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह